जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अप्रैल 2024 ।। अंक – 45 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से जुड़कर चंदा दीदी ने तरक्की की राह पर बढ़ाया कदम (पृष्ठ – 02)

जीविका में जुड़ाव से आयशा के जीवन में आया बदलाव (पृष्ठ – 03)

उद्यमिता से जानकी देवी में आई आत्मनिर्भरता (पृष्ठ – 04)

कौशल विकास और रोजगार का अवसर प्राप्त कर युवा बन रहे स्वावलंबी

युवा वर्ग अपने मन में रोजगार या स्वरोजगार करने की लालशा रखते हैं, जिससे वे अपने जीवन को खुशहाल और आत्मनिर्भर बना सकें। उनके इस लालशा को साकार करने के लिए जीविका परियोजना के द्वारा अनेकों प्रयास किये जा रहे हैं। इनमें मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के लिए रोजगार हेतु अवसरों की उपलब्धता, कौशल विकास, रोजगारपरक प्रशिक्षण, स्वरोजगार हेतु मार्गदर्शन प्रदान किये जा रहे हैं।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के युवक–युवतियों को कौशल विकास एवं रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले 15 से 35 वर्ष की आयु के युवाओं को उनकी रूचि एवं योग्यता के अनुसार प्रशिक्षण एवं नियोजन और स्वरोजगार प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। युवाओं को जरूरी सूचनाएँ एवं जानकारियाँ प्रदान कर उन्हें कैरियर निर्माण हेतु उत्प्रेरित करने का कार्य किया जा रहा है, ताकि वे अपने लिए बेहतर अवसर का लाभ उठा सकें। रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण एवं सही मार्गदर्शन जैसे प्रयासों से बड़ी संख्या में युवक–युवतियाँ रोजगार तथा स्वरोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं और स्वावलंबी बन रहे हैं।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अंतर्गत निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे हैं:–

कम्युनिटी मोबलाईजेशन ड्राइव: जीविका स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संघ जैसे सामुदायिक संगठन में जीविका दीदियों को उनके बच्चों के लिए रोजगार, स्वरोजगार, रोजगारपरक नि:शुल्क प्रशिक्षण एवं अवसर के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है, ताकि वे अपने बच्चों को इन प्रयासों का लाभ दिला सकें। युवाओं को दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अंतर्गत प्रशिक्षण हेतु संचालित परियोजना क्रियान्वयन इकाई (पी.आई.ए.) के माध्यम से विभिन्न ट्रेडो में नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण दिया जाता है।

यूथ मोबलाईजेशन ड्राइव: 15 से 35 वर्ष के युवाओं को यूथ मोबलाईजेशन ड्राइव के माध्यम से उनके लिए दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अंतर्गत चलाए जा रहे कौशल विकास, प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर की जानकारी दी जाती है। उन्हें प्रशिक्षण केन्द्रों में जा कर निबंधन एवं उनसे होने वाले लाभों के बारे में बताया जाता है।

रोजगार–सह–मार्गदर्शन मेला: जीविका परियोजना के माध्यम से प्रखंड स्तर पर रोजगार–सह–मार्गदर्शन मेला आयोजित कर युवाओं को नियोजन कर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जाते हैं। साथ ही स्वरोजगार, रोजगारपरक प्रशिक्षण और दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अंतर्गत प्रशिक्षण हेतु संचालित विभिन्न परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा जानकारी भी प्रदान की जाती है। रोजगार मेला में युवाओं को मेला में आये हुए कंपनियों के माध्यम से सीधे नियुक्तिपत्र भी दिया जाता है। इसके अलावा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान अंतर्गत पंजीयन भी कराया जाता है।

प्रशिक्षण एवं रोजगार के अवसर: दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के अंतर्गत परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी (पी.आई.ए.) के माध्यम से नि:शुल्क कौशल प्रशिक्षण दिया जाता है। इन संस्थानों में युवक–युवतियों के लिए नि:शुल्क रहने, खाने और प्रशिक्षण की व्यवस्था रहती है। उनकी रूचि और योग्यता के अनुसार संबधित ट्रेड एवं संक्टर में नि:शुल्क प्रशिक्षण दिलाया जाता है। युवक–युवतियों को सिलाई, नर्सिंग, होटल मैनेजमेंट, इलेक्ट्रिशियन, सेल्स, कंप्यूटर, सॉफ्ट स्किल, जेनरल ड्यूटी असिस्टेंट इत्यादि ट्रेडो में नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण दिया जाता है। इस योजना अंतर्गत महिला, अल्पसंख्यक, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग से आने वाले युवाओं को वरीयता दी जाती है। प्रशिक्षण उपरांत उन्हें सीधे नौकरी के अवसर भी प्रदान किये जाते हैं।

पोस्ट प्लेसमेंट सपोर्ट: प्रशिक्षण अपरांत युवाओं को रोजगार प्राप्त कार्यस्थल पर जाने और कार्य करने लिए शुरुआत में सहयोग राशि दी जाती है ताकि मासिक वेतन शुरू होने के पूर्व उन्हें मोनेट्री सपोर्ट (वित्तीय सहायता) दिया जा सके। इसके लिए युवाओं को अपने गृह जिला में प्राप्त नौकरी पर 2 माह तक प्रतिमाह 1 हजार रुपये, जिला के बाहर 3 माह तक प्रतिमाह 2 हजार रुपये, राज्य से बाहर नौकरी के अवसर मिलने पर 6 माह तक प्रतिमाह 1 हजार रुपये दिए जाते हैं।

एलुमिनाई–पेरेंट्स मीट:– प्रखंड और जिला स्तर पर एलुमिनाई–पेरेंट्स मीट के माध्यम से पूर्ववर्ती नियोजित छात्र और उनके अभिवावक को अनुभव साझा करने के अवसर दिय जाते हैं। ताकि अन्य युवक–युवतियाँ और उनके अभिभावक प्रोत्साहित हो सकें। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षण उपरांत रोजगार प्राप्त करने वाले युवक–युवतियों के जीवन में आए सकारात्मक बदलाव से अन्य युवक–युवतियाँ जानकारी प्राप्त कर सकें और वे इन योजनाओं एवं अवसरों का लाभ उठाने हेतु प्रेरित हो सकें।

सी.एक्स.ओ मिट (CxO Meet): इसके तहत विभिन्न उद्योगपतियों, नियोजन कर्त्ताओं एवं परियोजना क्रियान्वयन एजेंसियों के साथ कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें प्रशिक्षित एवं नियोजित युवाओं को भी भाग लेने का मौका मिलता है। इस कार्यशाला में उन्हें रोजगार के नए अवसर के बारे में जानकारी एवं सहयोग प्रदान की जाती है।

जीविका से जुड़कर चंदा दीदी ने तरक्की की राह पर बढ़ाया कदम

जहाँ चाह हो...वहाँ राह निकल ही आती है। हिम्मत से काम लेने पर रास्ता मिल ही जाता है। पूर्व में आर्थिक तंगी से जूझ रही चंदा देवी ने हिम्मत से रास्ता तलाशकर पूरे परिवार को संभाला है। किशनगंज जिला के ठाकुरगंज प्रखंड की रहने वाली चंदा दीदी वर्ष 2020 में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी है। समूह में जुड़ने से उनका क्षमतावर्धन हुआ। जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्हें स्वरोजगार करने की प्रेरणा मिली। उन्होंने समूह से 10 हजार रुपये ऋण लेकर मनिहारी दुकान शुरू की थी। शुरुआत में इन्होंने छोटे से गुमटी में यह दुकान खोला था। दुकान की कमाई से दीदी ने ससमय ऋण वापस कर दिया। शुरुआती सफलता से उत्साहित होकर दीदी ने दोबारा समूह से 30 हजार रुपये ऋण लिया। इस राशि को उन्होंने दुकान में पुनः निवेश किया। अधिक सामान की उपलब्धता से ग्राहकों को अधिक सामान मिलने लगा। दुकान पर ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी। परिणामस्वरूप दीदी की कमाई में भी बढ़ोतरी हुई। फिर दीदी ने अपनी दुकान को गुमटी से पक्का मकान में स्थानांतरित किया।

दीदी बताती हैं कि इस दुकान से उन्हें प्रति माह लगभग 15 से 20 हजार रुपये की आमदनी हो जाती है। चंदा दीदी ने दुकान की कमाई से अपना घर भी बनवाया है। वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला रही है।

दीदी बताती है कि उनके पति पहले मजदूरी करते थे जिसमें नियमित आमदनी नहीं होती थी। इससे घर में अक्सर सुविधाओं का अभाव रहता था। लेकिन समूह की मदद से अब वह उद्यमी बनी है। इससे उनकी अलग पहचान बनी है और मान–सम्मान भी बढ़ा है। चंदा दीदी अपनी मेहनत से आर्थिक सशक्ति की राह पर तेजी से आगे बढ़ रही है।

बिस्कुट उद्योग से प्रीति के जीवन में आया बदलाव

गांव की नारी अब कारोबारी बनकर अपनी खास पहचान बना रही है। तमाम क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए महिलाओं ने अपनी कामयाबी की कहानी लिखी है। नालंदा जिला अंतर्गत चण्डी प्रखंड की रहने वाली प्रीति कुमारी उन महिलाओं में शुमार है, जिन्होंने अपने काम से अपनी अलग पहचान बनाई है और अपने परिवार को आर्थिक सशक्ति की राह पर भी अग्रसर किया है।

प्रीति कुमारी वर्ष 2020 में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। समूह में जुड़ने के पूर्व उनकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके पति अमित कुमार, मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। मजदूरी से प्राप्त होने वाली सीमित आय से चार सदस्यों वाले इस परिवार का गुजर–बसर करना संभव नहीं हो पा रहा था। ऐसे में प्रीति कुमारी अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए कुछ करना चाहती थी। यही सोचकर प्रीति ने समूह से ऋण लेकर स्वरोजगार शुरू करने का मन बनाया। अपने पति के साथ विमर्श के उपरांत उन्होंने बिस्कुट बनाने का उद्यम शुरू करने का फैसला किया। प्रीति ने सबसे पहले समूह से ऋण लेकर 5,000 रुपये में दुकान के लिए एक कमरा किराये पर लिया एवं 30 हजार रुपये में बिस्कुट बनाने वाली मशीन खरीदी जिससे उन्होंने बिस्कुट बनाने का काम प्रारंभ किया। शुरुआत में चुनौतियाँ काफी थीं और उनके मन में इस उद्यम को लेकर काफी डर भी था। लेकिन पहले ही माह में उन्होंने बिस्कुट बेचकर 2,000 रुपये का लाभ कमाया। इससे उनका हौसला बढ़ा। वह इस काम को और उत्साह एवं लगन के साथ करने लगी। इससे दूसरे एवं तीसरे माह में उनका मुनाफा बढ़कर 5 हजार रुपये से ज्यादा हो गया। प्रीति ने सबसे पहले समूह से लिए ऋण की वापसी की। इसके बाद इस उद्योग का विस्तार करने के लिए उन्होंने समूह से पुनः 20 हजार रुपये ऋण लिया। इससे प्रीति ने बिस्कुट उद्योग का विस्तार किया, जिससे उनकी आमदनी भी बढ़ी है।

वर्त्तमान में प्रीति के बिस्कुट उद्योग को अब काफी पहचान मिल चुकी है। इससे होने वाली कमाई से इनका परिवार अब आर्थिक रूप सशक्त हुआ है।

मेहनत एवं लगन से स्वावलंबन

प्रभावती देवी पूर्वी चम्पारण जिला अंतर्गत संग्रामपुर प्रखंड के नंदपुर गाँव की निवासी है। घर की आर्थिक स्थिति खराब हाने की वजह से उनका परिवार संकटों से गुजर रहा था। पैसों की जरूरत पड़ जाने पर उन्हें दूसरे के सामने हाथ फैलाने की नौबत रहती थी। परिवार को आर्थिक तंगी से बाहर निकालने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। इसी बीच, वर्ष 2020 में वह जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। आमतौर पर विपत्ति के समय में अपने लोग भी साथ छोड़ देते हैं। लेकिन जीविका समूह के रूप में प्रभावती को एक ऐसा परिवार मिल गया, जहाँ वह अपने दु:ख–तकलीफ को साझा कर सकती थी। प्रभावती को जीविका समूह से 15,000 रुपये का ऋण प्रदान किया गया, जिससे वह अपने परिवार के लिए आर्थिक गतिविधि संचालित कर सके। इस राशि से प्रभावती ने गाँव में ही किराना दुकान शुरू किया। दुकान खुलने से गाँव–मोहल्ले वालों को सामान खरीदने में सुविधा होने लगी और प्रभावती को भी जीविकोपार्जन का एक साधन मिल गया। आस–पास की जीविका दीदियाँ प्रभावती की किराना दुकान से खरीदारी करने लगी, इससे उन्हें दुकान से आमदनी होने लगी। इस आमदनी से वह समूह से लिए ऋण की वापसी करने लगी एवं परिवार का भी गुजारा अच्छे से करने लगी। इसके अलावा वह कुछ रुपये बचत भी करती थी। समूह में जुड़ने से प्रभावती को जीविकोपार्जन का सहारा मिलने के साथ–साथ उनका ज्ञानवर्धन भी हुया है।

जीविका के साथ उन्होंने वर्ष 2020 में यात्रा प्रारम्भ किया था। पिछले 4 वर्षों की इस यात्रा में ही प्रभावती के किस्मत के बंद दरवाजे मानो खुल गए हैं। गृहस्थी की गाड़ी व्यवसाय की पटरियों पर तेजी से दौड़ने लगी है। किराना दुकान के साथ–साथ वह सब्जी भी बेचती है। जिससे उन्हें प्रतिमाह 10 से 12 हजार रुपये की आमदनी हो जाती है। बच्चों को समुचित पोषण देने के साथ–साथ बेहतर शिक्षा दिलवाने के लिए वह प्रयत्नशील है। प्रभावती देवी, उपनी मेहनत और लगन के साथ–साथ समूह की दीदियों के सहयोग से गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकलकर सुखमय जीवन व्यतीत कर रही है।

जीविका में जुड़ाव से आयशा के जीवन में आया बदलाव

आयशा खातून पश्चिम चम्पारण जिला के योगापट्टी प्रखंड अंतर्गत पिपरा गाँव की रहने वाली है। आयशा के पति गुजर जाने से उनका परिवार बेहद तंगहाली से जूझ रहा था। अपने दो बेटे और एक बेटी की जिम्मेदारी अकेले आयशा के ऊपर थी। ऐसे में परिवार का भरण–पोषण करना उनके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण था। लेकिन आयशा ने हार नहीं माना। ऐसे बुरे वक्त में आयशा को जीविका स्वयं सहायता समूह ने सहारा दिया। यहीं से उनके जीवन में बदलाव की शुरुआत हुई। आयशा खातून प्रगति जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। समूह से जुड़ने के बाद वह इसकी बैठकों में नियमत रूप से जाने लगी। इससे उनमें बचत करने की आदत विकसित हुई। इसी बीच आयशा ने समूह से 20,000 रुपये ऋण लेकर बकरी पालन का काम शुरू किया। कुछ दिनों के बाद धीरे–धीरे उन्होंने समूह से लिए ऋण वापस कर दिया। आयशा खातून अपने परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए रोजगार के अनेक साधन अपनाना चाहती थी। इसके लिए उन्होंने समूह से पुन: 30,000 रुपये ऋण लिया और श्रृंगार दुकान की शुरुआत की। अब वह श्रृंगार दुकान एवं बकरी पालन कर अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही है।

अपनी मेहनत एवं लगन से वह दुकान को आगे बढ़ा रही है। दुकान से होने वाली आय से वह परिवार का गुजारा करने के साथ–साथ प्रति माह ऋण की वापसी भी कर रही है। आयशा ने सिर्फ कमाने पर ही ध्यान नहीं दिया, बल्कि भविष्य के लिए भी सोचा है। वह हर महीने अपनी कमाई का एक हिस्सा बचत करती है। इसके अलावा उन्होंने दुकान की आमदनी से इसमें पूंजी निवेश भी किया। इस दूरदर्शिता से उनके दुकान का विस्तार हो रहा है।

वर्तमान समय में आयशा दीदी के पास 3 बकरियां है। वहीं श्रृंगार दुकान की परिसंपत्ति बढ़कर 3 लाख रुपये से ज्यादा हो गई है। अब वह प्रत्येक माह 20–25 हजार रुपये की आय अर्जित कर लेती है। आयशा दीदी का नाम अब लखपति दीदी के रूप में भी हो रहा है। वह कहती है कि गरीबी कोई बाधा नहीं है, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति, मेहनत और दूरदर्शिता से सफलता हासिल किया जा सकता है।

उद्यमिता से जानकी देवी में आई आत्मनिर्भरता

ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ पहले केवल घर के कामों तक ही सीमित रहती थीं, लेकिन जीविका की वजह से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के जीवन में काफी सकारात्मक बदलाव आया है। अब वे घर से बाहर निकलकर उद्यमी बन रही हैं। बदलते दौर में महिलाओं ने अब तमाम क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए कामयाबी हासिल कर रही है। ऐसी ही एक उद्यमी दीदी है जानकी देवी।

भागलपुर जिला के खरीक प्रखंड अन्तर्गत राघोपुर ग्राम पंचायत के लोकमानपुर गांव की रहने वाली जानकी देवी को जीविका ने एक पहचान दी है। उन्हें उद्यमिता गतिविधियों से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाया है। पूर्व में जानकी देवी का परिवार मजदूरी पर आश्रित था। उनके पति सिपाही मंडल लकड़ी का फर्नीचर बनाने का काम करते हैं। लेकिन अपनी दुकान नहीं होने की वजह से वह दूसरे के घर में दैनिक मजदूरी पर फर्नीचर निर्माण करते थे। इसके बदले उन्हें जो मजदूरी मिलती थी, उससे उनके परिवार का भरण–पोषण होता था। कभी–कभी उनके पास काम का अभाव भी रहता था। ऐसी स्थिति में घर का खर्च चलाना मुश्किल हो जाता था। काम की तलाश में वह कभी–कभी घर छोड़कर बाहर चले जाते थे, जिससे परिवार अकेला हो जाता था। ऐसे में जानकी देवी और उनके पति अपने गाँव में ही रहकर फर्नीचर की दुकान शुरू करना चाहते थे, जिससे सालों भर उन्हें काम मिल सके और परिवार के साथ जीवन भी गुजार सके।

स्टार्ट–अप ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम (एस.वी.ई.पी.) से जुड़ाव :– जानकी देवी भगवती जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। वह समूह की बैठकों में नियमित रूप से हिस्सा लेती थी। इसी दौरान उन्हें स्टार्ट–अप ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम (एस.वी.ई.पी.) योजना के बारे में पता चला। लोगों को अपने गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एस.वी.ई.पी. योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत ग्रामीण परिवार को उद्यम विकास हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। साथ हीं उन्हें वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इस योजना के तहत कार्य करने वाले समूह की सदस्य अलका दीदी ने जानकी दीदी को उद्यम स्थापना हेतु प्रोत्साहित किया। अलका दीदी की मदद से इन्होंने अपने फर्नीचर व्यवसाय हेतु व्यापारिक योजना तैयार किया। तदुपरांत उद्यम के सफल संचालन हेतु जानकी देवी को प्रशिक्षित भी किया गया। इसके बाद ग्राम संगठन की बैठक में इसे अनुमोदित कराते हुए जानकी देवी को एस.वी.ई.पी. योजना के तहत 35,000 रुपये का ऋण उपलब्ध कराया गया।

उद्यम की स्थापना :– एस.वी.ई.पी. योजना के तहत 35,000 रुपये के ऋण प्राप्त होने के बाद उन्होंने तकरीबन 20,000 रुपये का इंतजाम खुद किया। इस शरुआती पूँजी के साथ उन्होंने अपना फर्नीचर व्यवसाय प्रारंभ किया। वह अपने पति के साथ मिलकर दुकान में फर्नीचर निर्माण का कार्य करने लगी। निर्मित फर्नीचर को बेचकर उन्हें अच्छी आमदनी होती है। अब उन्हें काम की तालाश में कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। जानकी देवी और उनके पति मिलकर अब विभिन्न प्रकार के फर्नीचर का निर्माण करते हैं और इसे बेचकर उन्हें अच्छी आय अर्जित हो जाती है।

जानकी देवी बताती है कि इस दुकान से उन्हें प्रत्येक माह औसतन 12 से 15 हजार रुपये आमदनी हो जाती है। वर्तमान समय में उनकी दुकान में तकरीबन एक लाख रुपये से ज्यादा के फर्नीचर उपलब्ध हैं। अब उनका परिवार खुशहाली की ओर अग्रसर है। इस प्रकार जानकी दीदी ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम से जुड़कर एक सफल उद्यमी बनी है। उनका नाम अब लखपति दीदी के रूप में भी लिया जा रहा है। जानकी दीदी ने अपने परिश्रम, लगन एवं जीविका की मदद से अपने जीवन को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार